एम.एच.डी.-23 : मध्ययुगीन कविता–1
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–23
सत्रीय कार्य कोडः एम.एच.डी–23/टी.एम.ए/2021–2022
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित पद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : **10× 4 = 40**

(क) राजा गियँ कै सुनहु निकाई। जनु कुम्हार धरि चाक फिराई।।
भोंगत नारि कचोरा लावा। पीत निरातर गहि दिखरावा।।
देव सराहँहि (तैसो) गोरी। गियँ उँचार गह लिहसि अजोरी।।
अस गियँ मनुसँहि दीख न काहू। ठास धरा जनु चलै कियाहू।।
का कहुँ असकै दयी सँवारीं। को तिह लाग दयि अँकवारी।।
हियै सिरान राजा कर, सुनसि कण्ठ अँकवारि।।
गोबर मार विधासों, आनों चाँदा नारि।।

(ख) बन खोजन पिअ न मिलहिं, बन मँह प्रीतम नाह।
रैदास पिअ है बसि रह्यो, मानव प्रेमहि मांह।।

(ग) बूझत स्याम कौन तू गोरी।
कहाँ रहति, काकी है बेटी, देखी तहीं कहूँ ब्रज खोरी।।
काहे कौं हम ब्रज–तन आवतिं, खेलति रहतिं आपनी पौरी।।
सुनत रहतिं स्रवननि नँद–ढोटा, करत फिरत माखन–दधि चोरी।।
तुम्हरौ कहा चोरि हम लैहैं, खेलन चलौ संग मिलि जोरी।।
सूरदास प्रभु रसिक–सिरोमनि, बातनि भुरइ राधिका भोरी।।

(घ) नौ लख गाय सुनी हम नन्द के तापर दूध दही न अघाने।
माँगत भीख फिरौ बन ही बन झूठि ही बातन के पन पाने।।
और की नारिन के मुख जोबत लाज गहौ कछु होहु सयाने।
जाहु भले जु चले घर जाहु चले बस जाउ वृंदावन जाने।।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (प्रत्येक का उत्तर लगभग 500 शब्दों में) दीजिए : **15× 3 = 45**

(i) निर्गुण काव्यधारा के प्रमुख पारिभाषिक शब्दों का विवेचन कीजिए।
(ii) भक्तिकालीन प्रमुख कृष्ण भक्त कवियों का परिचय दीजिए।
(iii) रविदास का जीवन परिचय प्रस्तुत करते हुए निर्गुण काव्य में रविदास के योगदान की चर्चा कीजिए।

3. निम्नलिखित प्रत्येक विषय पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए : **5× 3 = 15**

(i) 'चंदायन' में परिवार और रीति रिवाज़
(ii) मध्ययुगीन काव्य परंपरा में रसखान
(iii) सूरदास के काव्य में वात्सल्य